ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

शोध पत्रिका

SANSKRITIK PRAVAH

Research Journal

वर्ष 8 अंक 1 फरवरी, 2021

Bi- annual Bi-lingual

A Multi Disciplinary Peer Reviewed (Refereed)
Research Journal
Dedicated to Socio-Cultural Harmony.

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान, जयपुर (राज.)

Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan

www.sanskritikpravah.com

Subscription Rate

Institution & Library	-	Rs. 2200 (5 years)	Rs. 6000 (15 years)
Individuals (Rajasthan)	-	Rs. 950 (5 years)	Rs. 2600 (15 years)
(Out of Rajasthan)	-	Rs. 1000 (5 years)	Rs. 2800 (15 years)
Single Copy	-	Rs. 125/-	

Subscription may be sent by cheques/drafts drawn in favour of
Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan

The responsibility for the facts stated, opinions expressed or conclusions reached is entirely that of the authors / contributors and the **'Sanskritik Pravah' Research Journal** accepts no responsibility for them.

Correspondence and Contact

सांस्कृतिक प्रवाह

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

E-mail : editor.sprj@gmail.com
: ramsjaipur@gmail.com
website : www.sanskritikpravah.com
Contact : 0141-4038590 (4 PM Onwards), 094143-12288 (Chief Editor)
094600-70031(Editor)

Published by : Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur, Rajasthan (India)
B-19, Madhukar Bhawan, New Colony, Jaipur-302001

Printed at : Kumar & Company, Jaipur

ISSN 2348-2796

सांस्कृतिक प्रवाह

शोध पत्रिका

वर्ष 8 अंक 1 फरवरी, 2021

अर्द्धवार्षिक द्वि-भाषी

सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय के लिए
समर्पित एक बहु-विषयात्मक शोध पत्रिका

website : www.sanskritikpravah.com

अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान

बी-19, मधुकर भवन, न्यू कॉलोनी, जयपुर-302001

Sanskritik Pravah Research Journal

Patron

Sh. Ramprasad
Social Worker & Guardian, Akhil Bhartiya Sanskriti Samanvaya Sansthan, Jaipur (Raj.)

Editorial Advisory Board

Dr. Kuldeep Chand Agnihotri
Vice Chancellor, Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala (H.P.)

Dr. Bhagwati Prasad Sharma
Vice Chancellor, Gautam Buddha University, Greater Noida (U.P.)

Prof. J. P. Sharma
Ex Vice Chancellor,
MLS University, Udaipur (Raj.)

Prof. Bhagirath Singh
Vice Chancellor,
Pandit Deen Dayal Upadhyay University, Sikar (Raj.)

Prof. M. L. Chhipa
Ex Vice Chancellor,
A.B. Vajpayee
Hindi University, Bhopal (M.P.)

Prof. Vibha Upadhyay
Ex. Head, Department of History and Indian Culture, University of Rajasthan, Jaipur

Prof. Alpana Kateja
Professor of Economics,
University of Rajasthan, Jaipur (Raj.)

Dr. Shreerang Godbole
Endocrinologist, Social Worker & Writer,
Pune (Maharastra)

Managing Editor

Dr. Ram Karan Sharma
Ex- Principal & Head,
Deptt. of Law and Management,
NIMS University, Jaipur (Raj.)
H-28, Haldighati Marg,
Jaipur-302018

Chief Editor

Sh. Ram Swaroop Agrawal
Ex Principal, Govt. Law College,
Kota & Sriganganagar (Raj.)
72/25, Patel Marg, Mansarovar, Jaipur-302020
E-mail : ramsjaipur@gmail.com
Mobile : 09414312288

Editor

Dr. Gopal Sharan Gupta
Centre for Rajasthan Studies,
University of Rajasthan, Jaipur
Plot No. 28, Gyanvihar Colony, Model Town,
Jagatpura Road, Malviya Magar, Jaipur-302017
E-mail : gsgupta1960gmail.com,
Mobile : 09460070031

Editorial Board

Dr. Ashutosh Pant
Chairman, Fluorecent Group of, Institutions,
Sec -26, Near N.R.I Circle, Pratap Nagar, Jaipur - 302033
17, Nandpuri, Malviya Nagar, Jaipur-302017
E-mail : pant_ashutosh@rediffmail.com,
Mobile : 09636770535

Dr. Sunil Asopa
Professor, Deptt. of Law,
J.N.V. University, Jodhpur
61-B, Laxmi Nagar, Jodhpur-324006,
E-mail : sunasopa@gmail.com,
Mobile : 09414294406

Dr. Satish Chand Agrawal
Assistant Professor, Deptt. of Poltical Science,
M.L.S. University, Udaipur (Raj).
Plot No. 9, Agrasen Nagar, Udaipole, Udaipur-313001
E-mail : satish.political@gmail.com ,
Mobile : 09783055596

Dr Kailash Chand Gurjar
Assistant Professor, Deptt. of History,
M.L.S. University, Udaipur(Raj)
W- 6 , Nehru Hostel, Hiran Magari,
Sector -3, Udaipur-313001
E-mail : kailashchand191977@gmail.com
Mobile:9929089995

About Contributors of this issue

1. **डॉ. बी.आर. मणी**

   प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण (ASI) के पूर्व अतिरिक्त महानिदेशक तथा दिल्ली स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय (National Museum) के पूर्व महानिदेशक, वर्तमान में राष्ट्रीय म्यूजियम संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय), नई दिल्ली के कुलपति। अयोध्या सहित 19 पुरातत्व स्थलों के उत्खनन कार्यों का सर्वेक्षण, 44 स्थलों के म्यूजियम के विकास कार्यों की देखरेख की है। कई राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार-सम्मेलनों में शोध-पत्र प्रस्तुत।

2. **डॉ. ए.के. सिन्हा**

   जाने-माने इतिहासकार, उत्तर प्रदेश इतिहास कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष, एम.जे.पी. रोहिलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (उत्तर प्रदेश) में 'प्राचीन इतिहास एवं संस्कृति' विभाग के पूर्व अध्यक्ष, 12 अंतर्राष्ट्रीय एवं 60 राष्ट्रीय सेमिनार, संगोष्ठियों में वाचन, 21 पुस्तकों सहित 98 शोध-पत्र प्रकाशित, पुस्तक 'Dialogule Between Culture : India and Iran' के लिए ईरान राष्ट्रपति द्वारा 'राष्ट्रपति पुरस्कार' से सम्मानित।

3. **प्रो. (डॉ.) रामकरण शर्मा**

   पूर्व प्राचार्य एवं संकायाध्यक्ष, विधि एवं प्रबन्ध संकाय, निम्स विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.), कॉलेज शिक्षा, राजस्थान के विभिन्न महाविद्यालयों में अध्यापन कार्य किया, कई शोध पत्र प्रकाशित।

4. **डॉ. अलका अग्रवाल**

   हिन्दी की जानी-मानी लेखिका, सेवानिवृत प्राचार्य (कॉलेज शिक्षा, राजस्थान), कविता तथा कहानियों की 20 पुस्तकें तथा राजनीति विज्ञान में 2 शोध-पुस्तकों सहित शोध पत्रिकाओं में कई आलेख प्रकाशित। साहित्य का मीरा पुरस्कार तथा अन्य कई पुरस्कार व सम्मान प्राप्त।

5. **डॉ. निधि शर्मा**

   एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), राजकीय कला महाविद्यालय, कोटा (राज.), विभिन्न शोध पत्रिकाओं में कई लेख प्रकाशित।

6. **डॉ. दिलीप कुमार नाथाणी**

   प्रभारी, संस्कृत शोध प्रकोष्ठ, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश शोध केन्द्र, मेहरानगढ़, जोधपुर एवं जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के संस्कृत विभाग में शोध निदेशक। अब तक 8 पुस्तकों का लेखन एवं सम्पादन, अनेक शोध-पत्र प्रकाशित, संस्कृत पत्रिका 'मान प्रकाश' के संपादक।

7. **डॉ. पप्पू लाल गुप्ता**

   राजकीय महाविद्यालय, कालाडेरा (राज.) में भूगोल विषय के एसोसिएट प्रोफेसर। शिक्षक संगठन में सक्रिय भूमिका सहित कई शोध आलेखों का प्रकाशन।

8. **डॉ. कैलाश चन्द गुर्जर**

   तीन पुस्तकें तथा 16 शोध-पत्र प्रकाशित, 35 अंतर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय सेमिनार/ कान्फ्रेन्स में शोध-पत्र प्रस्तुत करने के साथ ही कइयों में बीज भाषण दिया। सम्प्रति मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के इतिहास विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर के पद पर कार्यरत।

9. **डॉ. पूनम सेठी**

जयपुर के आई.आई.एस. विश्वविद्यालय से सेवानिवृत असिस्टेंट प्रोफेसर (हिन्दी), दो पुस्तकें तथा पत्र-पत्रिकाओं में लगभग 20 आलेख प्रकाशित, पूर्वोत्तर हिन्दी अकादमी, सम्पर्क संस्थान एवं दैनिक समाचार-पत्र राजस्थान पत्रिका द्वारा लेखन कार्य के लिए सम्मानित।

10. **डॉ. सुनील कुमार गुप्ता**

प्राचार्य, बाबा खींवादास पी.जी. कॉलेज, सांगलिया, सीकर (राजस्थान), 4 शोध पत्र प्रकाशित।

11. **डॉ. शिखा अग्रवाल**

एसोसिएट प्रोफेसर, (राजनीति विज्ञान), राजकीय महाविद्यालय, सुजानगढ़ (राजस्थान), 2 पुस्तकों सहित 11 शोधपत्र/ आलेख प्रकाशित।

12. **डॉ. अर्चना द्विवेदी**

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के पोस्ट डॉक्टरल फैलो के रूप में 13 वर्षों का शोध अनुभव। दो पुस्तकों सहित 30 शोध-पत्र एवं 5 आलेख प्रकाशित। राष्ट्रीय शोध संगोष्ठियों में 46 शोध-पत्रों का वाचन।

13. **डॉ. आरसी प्रसाद झा**

अनुसंधान सहयोगी, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण, प्रतापनगर, उदयपुर (राज.)

अनुक्रमणिका/ CONTENTS

पृष्ठ संख्या

संपादकीय ... 8

भाग -एक (राम की ऐतिहासिकता एवं राम कथा लेखन)

1. **Rama, The Omni-present** 11
   - Dr. B.R. Mani
2. **Questioning The Issue of The Rama's Historicity** 17
   - Prof. A.K. Sinha
3. **कुबेरनाथ राय का राम कथा लेखन** 29
   - डॉ. पूनम सेठी

भाग - दो

1. **भारतीय परम्परा में समता, समरसता एवं भ्रातृत्व : संवैधानिक परिप्रेक्ष्य** 41
   - प्रो. (डॉ.) रामकरण शर्मा
2. **स्वामी विवेकानन्द के चिंतन में धर्म एवं राष्ट्रवाद : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन** 59
   - डॉ. अलका अग्रवाल एवं डॉ. शिखा अग्रवाल
3. **प्रकृतिपूजक समाज, वैदिक दर्शन तथा भारत की आधारभूत संकल्पना** 69
   - डॉ. दिलीप कुमार नाथाणी
4. **वैदिक वृक्षायुर्वेद-एक दृष्टि** 83
   - डॉ. अर्चना द्विवेदी
5. **सर्वंगी सम्प्रदाय का सांस्कृतिक अवदान** 92
   - डॉ.सुनील कुमार गुप्ता
6. **Multifarious Aspects of The Story of A Folk God of Rajsthan : Pabuji** 99
   - Dr. Nidhi Sharma
7. **जनजातीय जीवन का यथार्थ : राजस्थान के झाडोल क्षेत्र के विशेष संदर्भ में** 107
   - डॉ. कैलाश चन्द गुर्जर
8. **डामोर (डामरिया) जनजाति की जनजातीय चित्र कलाकृति का मानवशास्त्रीय अध्ययन** 121
   - डॉ. आरसी प्रसाद झा
9. **प्राचीन भारतीय संस्कृति में स्त्री-पुरुष समानता की अवधारणा** 133
   - डॉ. पप्पू लाल गुप्ता

- Guidelines for authors 139
- Review & Publication Policy, Ethics Policy 142
- शोध पत्र हेतु मुख्य विषय 143
- संस्थान के प्रमुख प्रकाशन 146

संपादकीय

सांस्कृतिक प्रवाह का पिछला अंक राम के व्यक्तित्व-कृतित्व तथा राम की सर्वव्यापकता को समर्पित था। उसी कड़ी में तीन शोध आलेख इस अंक में भी हैं। राम की ऐतिहासिकता पर कई इतिहासकार प्रश्न चिह्न लगाते हैं। तीन में से दो आलेख इसी मुद्दे की छानबीन करते हुए हैं। प्रसिद्ध पुरातत्वविद तथा अयोध्या उत्खनन से जुड़े रहे डॉ. बी.आर. मणी इस संबंध में मिट्टी व पत्थरों की प्राचीन मूर्तियों तथा पुरातात्विक सामग्री की चर्चा करते हैं। वे पुराने शहरों के नजदीक किए गए पुरातात्विक सर्वेक्षणों का विश्लेषण भी करते हैं। परन्तु इतिहासकार प्रोफेसर ए.के. सिन्हा राम की ऐतिहासिकता पश्चिमी मापदण्डों पर आंकने की पद्धति पर सवालिया निशान लगाते हैं। उनका मानना है कि राष्ट्र का इतिहास 'वर्तमान एवं भविष्य से' एक निरंतरता में जुड़ा होता है, जिससे एक सतत जीवंतता का निर्माण होता है। यह सतत् जीवंतता भी ऐतिहासिकता का निर्माण करती है।

कुबेरनाथ राय साहित्य की एक रम्य विधा ललित निबन्ध परम्परा के विशिष्ट हस्ताक्षर हैं। उन्होंने एक नई लालित्यपूर्ण भंगिमा के साथ राम व राम कथा को एक नए बौद्धिक सम्मोहन से मंडित किया है। वे राम शब्द को भारतीयता की परिभाषा का पर्याय मानते हुए लिखते हैं- राम शब्द के मर्म को पहचानने का अर्थ है भारतीयता के सारे स्तरों के आदर्श रूप को पहचानना। कुबेरनाथ राय के राम कथा लेखन पर डॉ. पूनम सेठी का लिखा शोध-पत्र पठनीय है।

इस अंक के भाग दो में जहाँ प्रोफेसर रामकरण शर्मा द्वारा परिश्रमपूर्वक लिखे गए शोध पत्र में भारतीय परम्परा एवं भारतीय संविधान के परिप्रेक्ष्य में समता, समरसता तथा भ्रातृत्वभाव का सुंदर विवेचन है, वहीं जानी-मानी लेखिका डॉ. अलका अग्रवाल ने डॉ. शिखा अग्रवाल के साथ मिलकर स्वामी विवेकानन्द के चिंतन में धर्म एवं राष्ट्रवाद पर अपना विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

सनातन वैदिक संस्कृति का विकास प्रकृति के संरक्षण में ही हुआ। वेद व दूसरे धर्मशास्त्र प्रकृति संरक्षण एवं संवर्द्धन की बात करते हैं। ऋषियों के आश्रम तथा विद्या के केन्द्र गुरुकुल प्रकृति के अति निकट ही होते थे। इनके साथ जनजातियों का गहरा रिश्ता था। इन जनजातियों के पूजा स्थान-देवता, सांस्कृतिक मूल्य वैदिक धर्म के अनुसार थे, परन्तु धर्मान्तरण के हेतु से पाश्चात्य लेखकों द्वारा जनजातियों को हिन्दू समाज से अलग दिखाने का प्रयास किया गया, जिसे डॉ. दिलीप कुमार नाथाणी ने अपने शोध पत्र में रेखांकित किया है। आधुनिक विज्ञान के वनस्पति शास्त्र को प्राचीन भारतीय मनीषा में वृक्षायुर्वेद के नाम से परिभाषित करते हुए इसका विशद् वर्णन किया गया है, इसकी विवेचना डॉ. अर्चना द्विवेदी ने अपने शोध आलेख में की है।

जहाँ कोटा की डॉ. निधि शर्मा ने पाबुजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए लिखा है, वहीं सांगलिया (सीकर) के डॉ. सुनील कुमार गुप्ता सर्वंगी सम्प्रदाय के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन प्रस्तुत कर रहे हैं।

जनजातीय समाज के बारे में शोध परक आलेख सांस्कृतिक प्रवाह का विशिष्ट योगदान माना जा सकता है। डॉ. के.सी. गुर्जर एवं डॉ. आरसी प्रसाद झा ने उदयपुर क्षेत्र की जनजातियों की जीवन शैली तथा दूसरे पहलुओं पर जमीनी शोध कार्य करते हुए अपने आलेख लिखे हैं। स्त्री-पुरुष समानता के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते नजर आ रहे हैं डॉ. पी.एल. गुप्ता। आशा है, विविधतापूर्ण सामग्री से युक्त यह अंक पाठकों के लिए उपयोगी व पठनीय होगा।

- रामस्वरूप अग्रवाल